वैश्विक परिप्रेक्ष्य में आस्था और विधिक तर्कशीलता

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

वर्तमान वैश्विक समाज में जहाँ कानून और न्याय प्रणाली वैज्ञानिक तर्क, साक्ष्य आधारित प्रक्रिया और संविधानिक मूल्यों पर आधारित हैं, वहीं दूसरी ओर ज्योतिष- a prachin darshan और प्रतीकात्मक विश्वास प्रणाली- अब भी समाज के विविध स्तरों पर प्रभाव डालती है. यह संबंध केवल ऐतिहासिक नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक और वैचारिक रूप से आज भी जीवित है. कानून, न्याय और ज्योतिष का अंतर्संबंध आधुनिकता और परंपरा, तर्क और आस्था, तथा विधिक संरचना और सांस्कृतिक विश्वास के बीच संतुलन और संघर्ष की जटिलताओं को उद्घाटित करता है.

प्राचीन सभ्यताओं में न्याय और शासन संबंधी निर्णयों में ज्योतिष की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है. बाबिलोनिया, मिस्र, यूनान, भारत और चीन जैसी सभ्यताओं में राजाओं और सम्राटों के दरबार में राजज्योतिषी हुआ करते थे, जो ग्रहों की चाल और नक्षत्रों के आधार पर युद्ध, दंड, राज्य विस्तार, और न्याय देने की तिथि तक सुनिश्चित करते थे. भारतीय परंपरा में विशेष रूप से धर्मशास्त्रों—जैसे मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, नारदस्मृति आदि—में न्याय व्यवस्था को धर्म के अंग के रूप में देखा गया, जिसमें काल और ग्रहों की स्थिति को विधिक कार्यों की समय-निर्धारण प्रक्रिया में शामिल किया गया. मूर्तिकर्म-विधि, दंड-विधान, पापकर्म की शांति, तथा श्राद्ध और यज्ञ के आयोजन में शुभ मुहूर्त का विचार धर्मशास्त्रीय और ज्योतिषीय तर्क पर आधारित रहा है.

यद्यपि आधुनिक विधिक प्रणाली विज्ञान, मानवाधिकार और संवैधानिक विवेक पर आधारित है, लेकिन कई देशों में ज्योतिष का प्रभाव अप्रत्यक्ष रूप से अब भी देखा जाता है. उदाहरणार्थ, भारत जैसे देश में जहाँ संविधान धर्मनिरपेक्षता की बात करता है, वहीं भारतीय दण्ड संहिता और व्यक्तिगत कानूनों के क्रियान्वयन में समाज की धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताएं महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं. विवाह के पूर्व गुण-मिलान, नवग्रह शांति, शुभ समय पर याचिका दायर करना, तथा न्यायाधीशों या प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा पदग्रहण से पूर्व ज्योतिषीय परामर्श लेना सामान्य सामाजिक व्यवहार का भाग बन चुका है. भारतीय न्यायपालिका ने ज्योतिष को लेकर कई ऐतिहासिक निर्णय भी दिए हैं. पी.आई.एल. बनाम भारत सरकार मामले में भारत के उच्चतम न्यायालय ने यह निर्णय दिया कि ज्योतिष विज्ञान एक पारंपरिक ज्ञान प्रणाली है, जो हज़ारों वर्षों से प्रचलित है, अत: इसे शिक्षा का विषय बनाए रखना अनुचित नहीं है. इसी प्रकार प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य श्री के.एन. राव द्वारा उच्च शिक्षा में ज्योतिष के अध्ययन को लेकर लड़ी गई कानूनी लड़ाई ने यह स्थापित किया कि यह विषय केवल अंधविश्वास नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और अकादमिक विश्लेषण का क्षेत्र भी हो सकता है. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 25 के अंतर्गत धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार की छाया में ज्योतिष एक निजी आस्था के रूप में संरक्षित है.

विश्व के अन्य भागों में स्थिति मिश्रित है. इस्लामिक देशों में जैसे सऊदी अरब, ईरान, और अफगानिस्तान में, ज्योतिष को इस्लामिक शरिया के अंतर्गत हराम माना गया है. यहाँ इसे जादू-टोना या शिर्क के रूप में देखा जाता है और सार्वजनिक रूप से ज्योतिष का अभ्यास करने वालों पर कानूनी कार्यवाही की जाती है. इसके विपरीत, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी जैसे पश्चिमी देशों में ज्योतिष को एक निजी विश्वास या व्यावसायिक सेवा के रूप में मान्यता प्राप्त है, किंतु यह सख्त उपभोक्ता संरक्षण कानूनों के अंतर्गत आता है. यदि कोई ज्योतिषी धोखाधड़ी करता है या झूठे वादे करता है—जैसे भाग्य बदलने, कोर्ट केस जीताने, या बीमारी ठीक करने के गारंटीशुदा उपाय—तो उस पर भ्रामक विज्ञापन और धोखाधड़ी के अंतर्गत मुकदमा चलाया जा सकता है. अमेरिका के सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक निर्णय United States 1. Ballard (1944) ने यह सिद्धांत स्थापित किया कि न्यायपालिका को किसी धार्मिक विश्वास की 'सत्यता या असत्यता' पर निर्णय देने का अधिकार नहीं है, जिससे अप्रत्यक्ष रूप से ज्योतिष जैसे विश्वासों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मिलती है.

चीन की बात करें तो वहाँ सरकारी दृष्टिकोण से ज्योतिष को 'अंधविश्वास' मानते हुए प्रतिबंधित किया गया है, किंतु पारंपरिक रूप से फेंगशुई, चीनी राशिचक्र, और काल-गणना को समाज में व्यापक स्वीकृति प्राप्त है. विवाह, संपत्ति खरीद, या व्यापार प्रारंभ करने के निर्णय अब भी चीनी पंचांग और ज्योतिष पर आधारित शुभ दिन देखकर किए जाते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि विधिक संरचना और सांस्कृतिक व्यवहारों के बीच एक प्रकार की द्वैध स्थिति बनी हुई है. न्याय और ज्योतिष के संबंध में सबसे महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि कानून जहाँ व्यक्ति की इच्छा-स्वातंत्र्यता पर आधारित है, वहीं ज्योतिष भाग्य और पूर्वकर्म की अवधारणाओं को महत्व देता है. प्रश्न उठता है कि यदि कोई व्यक्ति ग्रहों के प्रभाव या भाग्यवश अपराध करता है तो क्या उसे पूर्ण रूप से जिम्मेदार ठहराया जा सकता है? विधिक दृष्टिकोण से व्यक्ति को उसकी मानसिक स्थिति और विवेक के आधार पर उत्तरदायी ठहराया जाता है, किंतु अनेक सांस्कृतिक संदर्भों में यह माना जाता है कि व्यक्ति का दंड भी उसके कर्मफल का हिस्सा है. हिंदू, बौद्ध और जैन दर्शन में यह धारणा प्रबल है कि न्याय केवल सामाजिक संतुलन नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और लौकिक पुनर्संतुलन की प्रक्रिया भी है, जिसमें ग्रहों की स्थिति हमारे कर्मों की सूचना मात्र देती है, न कि नियत भाग्य को बदलती है.

समकालीन समाजों में भी ज्योतिष कानून के इर्द-गिर्द उपस्थित रहता है—कभी निजी निर्णयों में, कभी प्रशासनिक स्तर पर, और कभी उपभोक्ता संरक्षण के संदर्भ में. विवाह-विच्छेद, सम्पत्ति विवाद, संतान-उत्पत्ति, और व्यवसाय के प्रारंभ से लेकर राजनीतिक चुनावों तक में कई बार अनौपचारिक रूप से ज्योतिषीय मार्गदर्शन लिया जाता है. कानून इस मार्गदर्शन को मान्यता नहीं देता, परंतु उसका खंडन भी नहीं करता जब तक कि वह किसी के अधिकारों का उल्लंघन न करे.

अत: यह कहा जा सकता है कि विश्व भर में ज्योतिष और कानून का संबंध एक अदृश्य रेखा पर चलता है—जहाँ एक ओर न्याय व्यवस्था तर्क, प्रमाण और संवैधानिकता पर खड़ी है, वहीं दूसरी ओर समाज के एक बड़े हिस्से की चेतना अब भी आस्था, काल, कर्म और ज्योतिषीय संकेतों से जुड़ी हुई है. यह संबंध केवल प्रतिस्पर्धी नहीं, अपितु सह-अस्तित्व का उदाहरण भी है. कानून और ज्योतिष दोनों ही मानवता के उस शाश्वत प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करते हैं—क्या न्याय केवल मानव रचना है या ब्रह्मांडीय व्यवस्था का प्रतिबिंब? यही वह स्थान है जहाँ विधिक तर्क और ज्योतिषीय दर्शन एक-दूसरे से टकराते नहीं, बल्कि परस्पर संवाद करते हैं. इस अंतर्संबंध को समझे बिना न तो सामाजिक न्याय की पूर्ण समझ संभव है, और न ही आस्था और आधुनिकता के बीच समन्वय की संकल्पना.

साप्ताहिक राशिफल

दिनांक- 06 से 12 जुलाई 2025 तक

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य मिथुन राशि में, मंगल सिंह राशि में, बुध कर्क राशि में, गुरू मिथुन राशि में, शुक्र वृषभ राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा तुला वृश्चिक धनु और मकर राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :-इस सप्ताह स्वग्रही शुक्र और उच्चाभिलाषी गुरू के प्रभाव से देश की जनोपयोगी योजनाओं का क्रियांवयन होने का योग है, कहीं वर्षा की न्यूनता तो कहीं वर्षा की अधिकता रहेगी. हाथियों को पीड़ा हो सकती है, दक्षिण भारत और पर्वतीय प्रदेश में अच्छी वर्षा का योग है. मासारंभ में सोना, चांदी, रूई के व्यापार में घटाबढ़ी रहेगी, भांग, अफीम, मोती, मणि, ऊन के व्यापार में तेजी होगी. जुलाई के शुरू में सभी तरह के बाजारों में उठा पटक चलेगी.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

रविवार	06 जुलाई को	देवशयनी एकादशी व्रत, हरिशयनी एकादशी व्रत
सोमवार	07 जुलाई को	वासुदेव द्वादशी वामन द्वादशी, चातुर्मास प्रारंभ
मंगलवार	08 जुलाई को	विजया पार्वती व्रत, मंगला तेरस, प्रदोष व्रत
गुरूवार	10 जुलाई को	स्नानदान व्रत पूर्णिमा, व्यास पूजा, गुरू पूर्णिमा

मेष

साझेदारियों के साथ व्यक्तिगत संबंध भी मजबूत होंगे, काननी मामले में प्रापर्टी संबंधी विवाद आसानी से सलझ सकते हैं,जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, नौकरी पेशा लोगों की पदोन्नति संभव है, कार्यक्षेत्र में आप संतुष्ट रहेंगे, अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें, घर परिवार में मांगलिक कार्य की योजना बनेगी, बुजुर्गो के स्वास्थ्य पर ध्यान दें.

वृषभ

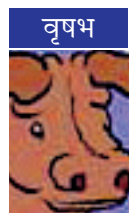

सोच समझकर ही आप आगे बढ़ना चाहेंगे, आप पूरे होश एवं जोश के साथ कार्य में जुट जायेंगे, भविष्य में लाभ की योजनाओं की शुरूआत हो सकती है अनुसंधान एवं कला के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. उच्च पदस्थ लोगों के साथ सामूहिक कार्य में भाग लेंगे, जीवनसाथी और बच्चों को आपसे अपेक्षायें बढ़ सकती है.

मिथुन

अपने मन में चल रहे अर्न्तद्वंद को दूर कर कार्य में जुट जाने का समय है, वरिष्ठों का सहयोग बना रहेगा, आप अपने स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिति पर अत्याधिक खर्च करेंगे, व्यवसाय में किसी करीबी मित्र को साझेदार बना सकते हैं, सप्ताह के अंतिम समय स्वास्थ्य में गिरावट संभावना है, श्रम उतना ही करें, जितना आपका शरीर साथ दे.

कर्क

व्यापार यात्रा और धार्मिक कार्यो में आपकी रूचि बढ़ेगी, सफलता की ओर कदम बढ़ेगे, कार्य पूर्ण करने में सहयोगी का रवैया आपके प्रति सहयोगात्मक रहेगा, जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, आप किसी बड़ी योजना में शामिल हो सकते हैं, परन्तु यह आपकी कार्यक्षमता के अनुकूल नहीं होगा, आपको कड़ी मेहनत और योजनाबद्ध तरीके से सफलता मिलेगी.

सिंह

सप्ताह आपका काफी उतार चढ़ाव वाला रहेगा, कार्य की व्यस्तता रहेगी, अधिकारियों से तालमेल बनाकर आगे बढ़े. सामाजिक क्षेत्र में सक्रिता बढ़ेगी, व्यापार में कुछ नये साझेदारों को शामिल कर सकते हैं, किसी करीबी मित्र या रिश्तेदार का सहयोग मिलेगा, पारिवारिक कार्यक्रमों में धन खर्च अधिक होगा. सप्ताह के अन्त में अति विश्वास आपको संकट में डाल सकता है.

कन्या

सामाजिक कार्यो में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे, जिस कार्य में हाथ डालेंगे, सफलता मिलेगी, वित्तीय स्थिति पहले से बेहतर होगी, परन्त आप अवसरों को गंवा सकते हैं, कैरियर और सामाजिक स्थिति में सुधार होगा, नये वाहन की योजना बन सकती है, सप्ताहान्त में सोच समझकर और कार्यक्षमता के अनुरूप कार्य होगा, घरेलू वातावरण खुशनुमा रहेगा, मनोरंजक यात्रा होगी.

तुला

अपनों के व्यवहार से खिन्नता होगी, घरेलू मामलों में विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा, सप्ताह के प्रारंभ में महत्व के कार्य करने की बजाय, रोजमर्रा की दिनचर्या ही निभाने का प्रयास करें, व्यवसाय में आप किसी अपरिचित पर अत्याधिक विश्वास न करें, स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, आप बच्चों के लिये कुछ हद तक परेशान रह सकते हैं.

वृश्चिक

कार्यस्थल पर आपकी योग्यता और कार्य के उचित मान सम्मान मिलेगा, अपनी बात मनवाने के लिये संघर्ष करना पड़ेगा, यह सप्ताह कैरियर की दृष्टि से मनोवांछित साबित होगा. आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर होगी, मानसिक असंतुलन किसी प्रकार का कष्ट अथवा घरेलू परेशानी से बचें. दाम्पत्य जीवन में सुख समृद्धि का भाव कायम रहेगा. कारोबार में ईमानदारी से ध्यान दें.

धनु

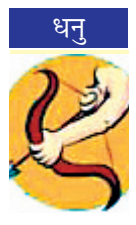

व्यापारिक और कैरियर की दृष्टि से समय महत्वपूर्ण रहेगा, विद्यार्थी पढ़ाई के साथ प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में व्यस्त रहेंगे, बच्चों की भावनाओं का ध्यान रखें, सप्ताह के मध्य महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ेगा, व्यवसाय के क्षेत्र में विरोधियों से सतर्क रहें, किसी करीबी मित्र के साथ दूर दराज की यात्रा पर जा सकते हैं, पुराना पैसा मिलने का योग है.

मकर

प्रगति की दिशा में आगे बढ़ेंगे, अपनी योग्यता और सामर्थ्य का उपयोग सफलता पाने के लिये करेंगे, आपके व्यवहार और सोच में व्यापक बदलाव आ सकता है, जमेष जायजाद की खरीद बिक्री और ऋण के लेनदेन से लाभ होगा, राजनेता अपने हित की रक्षा के लिये प्रयास करेंगे, जीवनसाथी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, गुमी वस्तु मिलने का योग है.

कुम्भ

कार्यक्षेत्र में कैरियर में बड़ी सफलता मिलेगी, जिससे हर क्षेत्र में आप अपने को खास और विशिष्ट स्थिति में पायेंगे, व्यवसायिक साझेदारों से सावधानी रखें, महत्वपूर्ण निर्णय होंगे, जीवनसाथी का सहयोग कार्यक्षेत्र में नई संभावना देता है, नई सोच व कार्यशैली लाभकारी सिद्ध होगी, मांगलिक कार्यो पर विचार होगा.

मीन

आप अच्छी तरह सोच विचार कर ही अपनी प्राथमिकतायें तय करेंगे, परस्पर विचारों का आदान प्रदान करने से अच्छी बात बन सकती है, अतिरिक्त जिम्मेदारियों का बोझ उठाना पड़ेगा, विशिष्टजनो से आपकी प्रशंसा होगी, भूमि घर खरीद बिक्री फायदेमंद रहेगी, सामाजिक सक्रियता बढ़ेगी, व्यापार एवं राजकीय कारणों से की गई यात्रा में बेहतर परिणाम मिलेंगे.

सावन सोमवार पर बन रहे ये संयोग

14 जुलाई को पहला सोमवार — मिलेगा शिव-गणेश की कृपा का दुर्लभ अवसर

सावन के पावन महीने की शुरुआत 11 जुलाई 2025 से हो रही है. यह भगवान शिव का प्रिय महीना माना जाता है. इस माह में शिव की आराधना अत्यंत फल देने वाली होती है. इस बार सावन में चार सोमवार पड़ रहे हैं. पहला सोमवार इस बार 14 जुलाई को पड़ रहा है. जिसमें पांच शुभ संयोगों के साथ भगवान शिव की आराधना की जाएगी.

सावन का पावन महीना भगवान शिव को समर्पित है. माना जाता है कि भगवान शिव अपने भक्तों पर शीघ्र अति शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं. वहीं इस खास महीने में शिव की आराधना करने से भक्तों को जल्द ही भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त हो जाता है. इस महीने के सोमवार भक्तों के लिए खास होते हैं. भक्तों इस दिन भगवान शिव की विशेष पूजा-अर्चना करके उनको प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं और बदले में उन्हें सौभाग्य की प्राप्ति होती है.

पिता-पुत्र की भक्ति का खास संयोग- इस बार सावन के इस महीने का पहला सोमवार चतुर्थी के दिन पड़ रहा है. चतुर्थी यानी कि भगवान गणेश जी का दिन. ऐसे में शिव परिवार के दो सदस्यों की भक्ति का मौका भक्तों के हाथ लगा है. पिता-पुत्र की पूजा से इस दिन आप उनसे मन मांगा वरदान प्राप्त कर सकते हैं.

पहले सावन सोमवार को शुभ संयोग

- पहले है आयुष्मान योग जो इस दिन 4:14 शाम तक रहेगा.
- वहीं सौभाग्य योग जो 4:14 के बाद शुरू होगा.
- इसके साथ ही धनिष्ठा योग सोमवार को सुबह 6:49 मिनट तक रहेगा.

शुक्र का रोहिणी नक्षत्र में गोचर इन राशियों के लिए लाएगा सुख-समृद्धि

8 जुलाई 2025 को शाम 4 बजकर 31 मिनट पर शुक्र ग्रह चंद्रमा के रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करेगा और 20 जुलाई तक इसी नक्षत्र में स्थित रहेगा. वैदिक ज्योतिष में शुक्र को प्रेम, कला, विलास और भौतिक सुख-सुविधाओं का कारक माना जाता है, जबकि रोहिणी नक्षत्र चंद्रमा का प्रिय नक्षत्र है, जो कोमलता, भावुकता और आकर्षण से जुड़ा है. इस गोचर का प्रभाव सभी राशियों पर महसूस किया जाएगा, लेकिन वृषभ, तुला, कर्क, मीन और कुंभ राशि के जातकों के लिए यह समय विशेष रूप से सौभाग्यशाली रहने वाला है.

राशिवार प्रभाव- वृषभ राशि- जातकों के लिए यह गोचर वरदान साबित होगा. करियर में सफलता, पदोन्नति या मनचाही उपलब्धि मिलने की संभावना है. समाज में सम्मान और प्रभाव बढ़ेगा, जिससे आत्मविश्वास मजबूत होगा.

कर्क राशि- लोगों के लिए यह समय पेशेवर जीवन को नई दिशा देगा. ऑफिस में रचनात्मक कार्यों में सफलता और वरिष्ठों से सराहना मिलेगी. विदेश से जुड़े कार्यों में लगे लोगों को बड़ा अवसर मिल सकता है.

तुला राशि- वालों के लिए शुक्र का यह गोचर आर्थिक दृष्टि से नई राह खोलेगा. विशेष रूप से फाइनेंस, बीमा, टैक्स या कंसल्टिंग जैसे क्षेत्रों से जुड़े लोगों को बड़ा लाभ मिलने के योग हैं.

कुंभ राशि- जातकों के लिए यह गोचर थोड़े खर्चीले लेकिन मानसिक संतोष देने वाला रहेगा. जीवन में विलासिता और फैशन से जुड़ी चीज़ों पर अधिक व्यय हो सकता है, लेकिन यह खर्चे आनंदित करेंगे.

मीन राशि- वालों के लिए यह गोचर आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा. आय में वृद्धि और कोई पुराना रुका हुआ पैसा मिलने की संभावना है.

घर में चींटियों का दिखना शुभ-अशुभ के संकेत

भारतीय संस्कृति में प्रकृति के हर जीव और घटना को गहरे संकेतों से जोड़कर देखा जाता है, और घर में चींटियों का आना भी ऐसा ही एक रहस्यमयी संकेत माना जाता है. इसे वास्तु और ज्योतिष दोनों दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण बताया गया है.

काली चींटियां-लक्ष्मी और समृद्धि का आगमन- काली चींटियों को आमतौर पर शुभता और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माना गया है. यदि घर में बिना किसी मिठाई या भोजन के काली चींटियां आती दिखाई दें, तो यह संकेत हो सकता है कि घर में धन-लाभ, शुभ समाचार या लक्ष्मी का आगमन होने वाला है. कई परंपराओं में काली चींटियों को आटे में मिलाकर खिलाना एक पुण्य कार्य माना गया है, जिससे आत्मिक और आर्थिक दोनों लाभ मिलते हैं.

लाल चींटियां- सतर्कता और संभावित अशुभता का संकेत-लाल चींटियां जब बड़ी संख्या में घर में तेजी से आती-जाती नजर आती हैं, तो इसे शुभ संकेत नहीं माना जाता. यह स्थिति घर में तनाव, झगड़ा, बीमारी या अन्य मानसिक परेशानियों की संभावना का संकेत हो सकती है. इसे डरने की बात नहीं, बल्कि एक चेतावनी माना जाता है कि व्यक्ति को अपने व्यवहार, सोच और वातावरण पर ध्यान देने की आवश्यकता है. यह समय आत्मनिरीक्षण और सावधानी से निर्णय लेने का हो सकता है.

गृह निर्माण से पूर्व वास्तु नियमों का पालन आवश्यक

अन्यथा आ सकती हैं बाधाएं

वास्तु विशेषज्ञों के अनुसार, जब भी किसी भवन का निर्माण किया जाना हो तो सबसे पहले भूमि की चारों दिशाओं को चिह्नित करना आवश्यक होता है. इसके बाद नींव की खुदाई करने से पहले यह निर्धारित किया जाना चाहिए कि किस दिशा से खुदाई आरंभ होगी.

गृह निर्माण कार्य को केवल एक साधारण प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक शुभ, सूक्ष्म और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संचालित की जाने वाली क्रिया माना जाता है. वास्तु शास्त्र के अनुसार, भवन या किसी भी संरचना के निर्माण से पूर्व भूमि की दिशा, दोषों की शुद्धि, सही खुदाई क्रम और वास्तु अनुसार पूजन बेहद ज़रूरी है, अन्यथा निर्माण में बाधाएं, आर्थिक तंगी और असफलता निश्चित है.

वास्तु विशेषज्ञों के अनुसार, जब भी किसी भवन का निर्माण किया जाना हो तो सबसे पहले भूमि की चारों दिशाओं को चिह्नित करना आवश्यक होता है. इसके बाद नींव की खुदाई करने से पहले यह निर्धारित किया जाना चाहिए कि किस दिशा से खुदाई आरंभ होगी.

खुदाई का सही क्रम-

वास्तु नियमों के अनुसार, नींव की खुदाई का शुभारंभ आग्नेय कोण (दक्षिण-पूर्व) से करना चाहिए, इसके बाद क्रमश: नैऋत्य कोण (दक्षिण-पश्चिम), वायव्य कोण (उत्तर-पश्चिम) और अंत में ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) में खुदाई होनी चाहिए. विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि नैऋत्य कोण से कभी भी खुदाई की शुरुआत नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इससे निर्माण कार्य में लगातार बाधाएं उत्पन्न होती हैं. ऐसा देखा गया है कि यदि खुदाई की शुरुआत नैऋत्य कोण से की जाए, तो अनेक प्रकार की समस्याएं आने लगती हैं, जैसे कि मजदूर समय पर नहीं आते, कार्य में दुर्घटनाएं होती हैं, सामग्री समय पर नहीं पहुंचती या कार्य लटक जाता है.

भूमि शुद्धि का महत्व-

भूमि खरीदने के बाद निर्माण आरंभ करने से पहले, उसे वास्तु के नियमों के अनुसार दोषमुक्त करना भी अति आवश्यक है. भूमि पर फैले अनावश्यक पत्थर, मलबा, गड्ढे, कंटीले पौधे और विशेष रूप से बबूल जैसे वृक्षों को हटाना चाहिए. बबूल के पेड़ विशेष रूप से वास्तु के लिए अशुभ माने गए हैं और इनके रहते हुए निर्माण कार्य में बाधाएं, आर्थिक नुकसान और मानसिक तनाव बना रहता है.

मलबे और गड्ढों का प्रभाव-

यदि भूमि के ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) या आग्नेय कोण (दक्षिण-पूर्व) में मलबे का ढेर है, तो उसे बिना हटाए निर्माण कार्य शुरू करना आर्थिक तंगी का कारण बन सकता है. इसी प्रकार यदि भूमि के मध्य भाग या नैऋत्य कोण में गड्ढा हो और उसे भरे बिना निर्माण कार्य आरंभ किया जाए, तो निर्माण आदि कार्य में गलतियां होती रहती हैं, जिससे धन की हानि होती है और कार्य रुक-रुक कर चलता है.

इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए, गृह निर्माण कार्य आरंभ करने से पहले भूमि पूजन करना अत्यंत आवश्यक माना गया है. अपनी जन्म कुण्डली के अनुसार भूमि पूजन का शुभ मुहूर्त का चयन कर विधिवत भूमि पूजन करना चाहिए ताकि निर्माण कार्य न केवल बाधा रहित हो, बल्कि उसमें समृद्धि और शुभ फल की भी प्राप्ति हो.